संगीत वादन

(छठी, सातवीं एवं आठवीं श्रेणी के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

संस्करण 2016 ..... प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction, annotation etc. are reserved by the Punjab School Education Board.

लेखिका व अनुवादक : श्रीमती शशी अरविन्द
लेखक : श्रीमती मन्प्रीत कौर
विषय संयोजक : श्रीमती चरणप्रीत कौर
संशोधन : श्रीमती रेणु भट्टी
चित्रकार : मनजीत सिंह ढिल्लों

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी–होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य–पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी–होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं० 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य–पुस्तकों के जाली ओर नकली प्रकाशन (पाठ्य–पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी जुर्म है।
   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य–पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।

मूल्य : ₹

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़–8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर–160062 द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स सहारनपुर इलैक्ट्रिक प्रैस, सहारनपुर

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड अपनी स्थापना के समय से ही स्कूल स्तर के सभी श्रेणियों के पाठ्यक्रम संशोधित करने और इन संशोधित पाठ्यक्रमों के अनुसार पाठ्य–पुस्तकें तैयार करने में प्रयत्नशील रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान शैक्षणिक दृष्टिकोण को प्रमुख रखते हुए बोर्ड ने पाठ्य–पुस्तकों की नव–रचना का एक विशेष कार्यक्रम आरम्भ किया है। यह पुस्तक इसी प्रोग्राम की एक कड़ी है।

संगीत वादन विषय का पाठ्यक्रम कई वर्षों से पुराना ही लागू था । आधुनिक युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस विषय के पाठ्यक्रम को संशोधित करना समय की माँग थी। अतएव: प्रवेश वर्ष 2010–11 से क्षेत्रीय विषय विशेषज्ञों के सहयोग से पाठ्यक्रम का संशोधन किया गया। संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रवेश वर्ष 2012–13 से संगीत विषय की नई पाठ्य–पुस्तकें तैयार की गई हैं।

इस्तीय पाठ्य–पुस्तक छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। पुस्तक की विषय वस्तु को रोचक, सरल ओर स्पष्ट बनाने के लिए आवश्यक साज़ों और संगीतज्ञों के चित्र दिये गये हैं। वादन के अभ्यास हेतु क्रियात्मक रूप में ग्रहण कर सकें।

आशा है कि यह पुस्तक अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए लाभदायक सिद्ध होती । फिर भी पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से प्राप्त सुझााव आदर सहित स्वीकार किया जायेंगे।

चेयरपर्सन
पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय सूची

प्रथम भाग

(छठी श्रेणी के लिए)

क्र.सं.	विषष	पृष्ठ
1.	संगीत (गायन, वादन, नृत्य)	2
2.	अलंकार (परिभाषा)	4
3.	आरोह–अवरोह	6
4.	लय (बिलम्बित, मध्य, द्रुत)	7
5.	सप्तक (मन्द्र, मध्य, तार)	8
6.	स्वर (शुद्ध स्वर)	9
7.	पाँच अलंकार	10
8.	ताल (कहरवा, दादरा)	12

द्वितीय भाग

(सातवीं श्रेणी के लिए)

क्र.सं.	विषष	पृष्ठ
1.	स्वर (शुद्ध स्वर, कोमल, तीव्र)	14
2.	नाद (आहत, अनाहत)	16
3.	वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी वर्जित स्वर	17

क्र.सं.	विषष	पृष्ठ
4.	राग, राग के नियम	19
5.	पकड़	20
6.	श्रुति	21
7.	जीवनी : पंडित विष्णु नारायण भात्तखण्डे	23
8.	सितार बजाने के लिए विशेष संकेत	25
9.	भूपाली राग	27
10	दुरगा राग	30
11	ताल (तीन ताल, रूपक)	32

द्वितीय भाग
(आठवीं श्रेणी के लिए)

क्र.सं.	विषष	पृष्ठ
1.	जाति की परिभाषा, जातियाँ (औड़व, षाड़व, सम्पूर्ण) और उपजातियाँ।	34
2.	मात्रा, विभाग, सम, ताली, खाली, आवर्तन	37
3.	वादक के गुण और अवगुण (दोष)	39

क्र.सं.	विषष	पृष्ठ
4.	थाट, नियम भात्तखण्डे जी के दस थाट	41
5.	जीवनी : पंडित रविशंकर	44
6.	भात्तखण्डे जी की स्वर लिपि	47
7.	भैरवी राग	49
8.	खमाज राग	52
9.	ताल (एक ताल, झपताल)	55
10	धुन, राग भैरवी, समाज राग	57
11	सितार की जानकारी	60
12	छठी, सातवीं और आठवीं के पाठयक्रम की सब तालों की दुगुन	64
13	रागों का चार्ट	65

प्रथम भाग

(छठी श्रेणी के लिए)

पाठ - 1

संगीत गायन, वादन, नृत्य

स्वर ताल, शुद्ध उच्चारण, हाव-भाव और शुद्ध मुद्रा के साथ गाया बजाया जाये उसे संगीत कहते हैं। संगीत शब्द गीत शब्द में उपर्सग लगा कर बना है। सं का अर्थ है अच्छा और गीत का अर्थ है गाना। संगीत गायन वादन और नृत्य के माध्यम से भाव पैदा करने वाली रचना है। इन तीनों के ही समूह को आधुनिक समय में संगीत कहा गया है। कई संगीतकार गायन को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। परन्तु असल में आजल संगीत की तीनों कलायें अपने-अपने रूप में बहुत विकसित हो चुकी हैं। जैसे गायन अपने शास्त्रीय रूप, सुगम रूप और लोकगीत के रूप में, वादन अपने एकल रूप, वृन्दावादन के रूप में और नृत्य, शास्त्रीय नृत्य, सुगम नृत्य और लोक नृत्य तीनों रूपों में विकसित हो रहा है।

संगीत की मुख्य निम्नलिखित तीन कलायें हैं:-

गायन:- जिस संगीत को कण्ठ द्वारा स्वर लय और ताल के साथ गाया जाये, उसे गायन कहा जाता है।

वादन:- जिस संगीत के स्वरों का लय और ताल के साथ किसी वाद्य पर बजाया जाये उसे वादन कहते हैं।

नृत्यः- जब अपने आत्मिक भावों को तालबद्ध ढंग से शारीरिक मुद्राओं के साथ प्रकट किया जाये उसे नृत्य कहते हैं।

गायन वादन और नृत्य का स्वतंत्र स्थान होने के बावजूद यह तीनों कलाओं का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है और यह तीनों एक दूसरे पर आश्रित हैं।

* * * * * *

पाठ - 2

अलंकार

जब स्वरों को किसी खास क्रम में रखते हुये आरोह-अवरोह के रूप में गाया-बजाया जाये उस रचना को अलंकार कहते हैं। अलंकार शब्द संस्कृत का शब्द है। जिसका अर्थ है आभूषण या गहना। जिस प्रकार शरीर को सजाने के लिये आभूषणों की आवश्यकता होती है उसी तरह संगीत का सजाने के लिऐ अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अलंकार के अभ्यास से गायन की शोभा बढ़ती हैं।

अंलकारों के लाभः-

1. अंलकारों के अभ्यास से स्वर ज्ञान बढ़ता है और लय की ठीक जानकारी मिलती है।

2. अंलकारों के अभ्यास से कल्पना शक्ति का विकास होता है।

3. अलंकारों का वाद्यों पर अभ्यास करने से माँसपेशियों को लम्बे समय तक काम करने की शक्ति मिलती है।

4. अलंकारों के अभ्यास से हाथ अच्छी तरह तैयार हो जाते हैं और

वाद में मिठास पैदा होती है।

5. अलंकारों के प्रयोग से गाते-बजाते समय राग की सुन्दरता को बढ़ाया जा सकता है।

अलंकारों के इतने महत्तव देखते हुऐ संगीत के विद्यार्थियों को अलंकारों का अभ्यास करना चाहिऐ ताकि वह उच्चकोटि के कलाकार बन सकें।

* * * * * *

पाठ - 3

आरोह-अवरोह

आरोह :- आरोह का अर्थ है चढ़ता क्रम अर्थात जब हम मध्य सप्तक के स से तार सप्तक के सं तक चढ़ता क्रम करते हैं उसे आरोह कहते हैं। जैसे स रे ग म प ध नी सं। इस में चढ़ता क्रम होने के कारण स्वरों की आवाज़ क्रमिक ऊँची होती जाती है।

अवरोह :- अवरोह का अर्थ है उतरता क्रम। तार सपक के सं से मध्य सप्तक के स तक जाने को अवरोह कहते हैं जैसे सं नी ध प म ग रे स। इनमें उतरते क्रम होने के कारण आवाज़ क्रमिक नीची होती जाती है।

गायक या वादक गाते व बजाते समय किसी विशेष स्वर पर नहीं ठहरते, ऊपर नीचे उतरते रहते हैं। इसको संगीत की भाषा में आरोह-अवरोह कहते हैं।

* * * * * *

पाठ - 4

लय

लय शब्द की उत्पत्ति 'ली' धातु से हुई हँ जिसका अर्थ है लगातार चलना, या इसे और भी आसान शब्दों में कहा जा सकता है, समय की बराबर चाल को लय कहते हैं। यह लय ही सारे 'संगीत' का आधार है।

लय तीन प्रकार की मानी जाती हैं:

1. विलम्बित लय
2. मध्य लय
3. द्रुत लय

1. विलम्बित लय:- जिस लय की गति बहुत धीमी होती है अर्थात साधारण गति से दुगनी कम होती है उसे विलम्बित लय कहते हैं।

2. मध्य लय:- जो लय न ज्यादा तेज़ और न ही बहुत धीमी हो अर्थात साधारण हो उसे मध्य लय कहते हैं। संगीत में इस लय का बड़ा महत्व है।

3. द्रुत लय:- मध्य लय से दुगनी तेज़ और विलम्बित लय से चौगुनी लय को द्रुत लय कहते हैं। इस लय से संगीत में थिरकन आ जाती है।

पाठ – 5

सप्तक

संगीत में प्रयोग होने वाले सात स्वरों के समूह का सप्तक कहते हैं। वह स्वर हैं :– स रे ग म प ध नी।

आवाज़ या ध्वनि कई तरह की होती है जैसे कोई आवाज़ भारी और कोई मोटी होती है, कोई बहुत पतली और बारीक होती है। ध्वनि के इस अन्तर को देखते हुए संगीत विद्वान सप्तक के मुख्य तीन प्रकार मानते हैं।

1. मन्द्र सप्तक :– जो आवाज़ ज्यादा नीची और भारी हो उसे मन्द्र सप्तक की आवाज़ कहते हैं। इन स्वरों की पहचान के लिये स्वर लिपि पद्धति अनुसार स्वरों के नीचे बिन्दु चिन्ह लगाया जाता है। जैसे रे़ ग़ म़

2. मध्य सप्तक :– इस सप्तक की आवाज़ न ज्यादा नीची होती है और न ही ज्यादा ऊँची होती है। अर्थात् साधारण होती है। इस सप्तक के स्वरों की पहचान के लिए इन पर कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता जैसे रे ग म

3. तार सप्तक :– जो आवाज़ ज्यादा ऊँ ची और तीखी होती है वह तार सप्तक की आवाज़ कहलाती है। यह मध्य सप्तक की आवाज़ से दुगनी ऊँची होती है। इन स्वरों की पहचान के लिये स्वन लिपि पद्धति अनुसार स्वरों के ऊपर बिन्दु चिन्ह लगाया जाता है जैसे रें गं मं।

* * * * * *

पाठ - 6

स्वर

स्वर की परिभाषा :- वह संगीत उपयोगी आवाज़ जो स्पष्ट और अपने आप में मीठी हो और सुनने वालों के मन को आकर्षित करे उसे स्वर कहते है।

शुद्ध स्वर :- वह स्वर जो अपने निश्चित स्थान पर रहते हैं उन्हें शुद्ध स्वर कहते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं:-

	स्वरों के नाम	उच्चारण में स्वरों के नाम
1	षड़ज	स
2	त्रृषभ	रे
3	गन्धार	ग
4	मध्यम	म
5	पंचम	प
6	धैवत	ध
7	निषाद	नी

इन स्वरों की पहचान के लिये स्वरों पर कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता। इन स्वरों को प्राकृतिक स्वर भी कहते हैं।

पाठ - 7

अलंकार

1

आरोह :- से रे ग म प ध नी सं

दा रा दा रा दा रा दा रा

अवरोह :- सं नी ध प म ग रे स

दा रा दा रा दा रा दा रा

2

आरोह :- सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह :- संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दादा

3

आरोहः- सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोहः-संनीध नीधय धपम पमग मगरे गरेस

दारादा दारदा दारादा दारादा दारादा दारादा

4

आरोहः- सरेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसं

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोहः-संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

5

आरोहः- सरेसरेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनी
दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा
धनी धनीसं
दारा दारादा

अवरोहः- संनीसंनीध नीधनीधप धपधपम पमपमग मगमगरे।
दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा
गरेगरेस
दारा दारा दा

* * * * * *

पाठ - 8

ताल दादरा और कहरावा

ताल कहरवा

परिचयः- यह 8 मात्राा की ताल है। इसके चार-चार मात्राओं के 2 भाग होते है। पहली मात्रा पर सम ताली तथा पाँचवी मात्रा पर खाली होती है। इस ताल का प्रयोग सुगम संगीत में शब्द, भजन, गज़ल, लोकगीत आदि के साथ किया जाता है।

ताल कहरवा

मात्रा	1 2 3 4	5 6 7 8
बोल	धा गे न ति	ना के धि ना
चिन्ह	X	0

ताल दादरा

परिचय :- इसमें 6 मात्राएँ होती हैं। इसमें 3-3 मात्रा के दो भाग होते हैं। पहली मात्रा पर सम ताली तथा चौथी मात्रा पर खाली होती है। यह ताल हल्की- फुल्की गतों और धुनों के साथ बजाई होती है।

ताल दादरा

मात्रा	1 2 3	4 5 6
बोल	धा धि ना	धा तिं ना
चिन्ह	X	0

द्वितीय भाग
(सातवीं श्रेणी के लिए)

पाठ -1

स्वर शुद्ध, (कोमल तीव्र)

वह संगीत उपयोगी आवाज़ जो सपष्ट और अपने आप में मीठी हो और जो सुनने वाले के मन को आकर्षित करे, उसे स्वर कहते हैं।

स्वर दो प्रकार के होते हैं।

1. अचल स्वर

2. चल स्वर

अचल स्वरः- जो स्वर अपने निश्चित स्थान पर स्थिर रहते हैं उन्हें अचल स्वर कहते हैं। यह दो हैं स, प।

चल स्वरः- स, प का छोड़कर बाकी के स्वर जो अपने स्थान से ऊपर या नीचे की तरफ हों उन्हें चल स्वर कहते हैं। यह गिनती में पाँच हैं रे ग म प ध नी।

शुद्ध स्वरः- चल और अचल स्वरों के अपने शुद्ध रूप को शुद्ध स्वर कहते हैं। यह गिनती में सात हैं, स रे ग म रे प ध नी। शुद्ध स्वरों की पहचान के लिये इन स्वरों पर कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता। यह हमेशा अपने स्थान पर निश्चित रहते हैं। इन्हें प्राकृतिक स्वर भी कहते हैं।

कोमल स्वरः- जब शुद्ध आवाज़ को नियत स्थान से थोड़ा नीचे किया जाता है उन्हें कोमल स्वर कहते हैं। यह सिर्फ चार हैं रे ग ध नी। स्वर लिपि में इनकी पहचान के लिये स्वरों के नीचे एक छोटी सी रेखा लगाई जाती है जो कोमल स्वरों के बारे सूचित करती है। जैसे रे ग ध नी।

तीव्र स्वरः- जब शुद्ध म की आवाज़ को उसके नियत स्थान से थोड़ा ऊँचा किया जाता है उसे तीव्र स्वर कहते हैं। स्वर लिपि में इनकी

पहचन के लिये स्वर के ऊपर खड़ी रेखा लगाई जाती है जैसे मं।

इस प्रकार कुल शुद्ध स्वर कोमल स्वर और तीव्र स्वर मिल कर कुल 12 स्वर बनते हैं।

जैसे :- स रे॒ रे ग॒ ग म मं प ध॒ ध नी नी॒ स।

* * * * * *

पाठ -2

नाद

स्थिर आन्दोलन संख्या वाली मुधर ध्वनि जिस का प्रयोग संगीत में किया जाये उसे नाद कहते हैं। नाद का अर्थ है 'आवाज़'।

नाद के दो रूप माने जाते हैं :-

1. अनाहत नाद

2. आहत नाद

1. अनाहत नाद :- जो आवाज़ बिना किसी आघात (चोट) के पैदा हो उसे अनाहत नाद कहते हैं जैसे, अगर अपनी उँगलियों को कानों में डालें और जो सांय - सांय या सनसनाहट सुनाई देती है उसे अनाहत नाद कहते हैं। यह ध्वनि संगीत उपयोगी नहीं है। यह केवल योग-साधना के लिये ही है।

2. आहत नाद :- आहत का शाब्दिक अर्थ है 'चोट'। जो आवाज़ किसी चोट, रगड़ स्पर्श आदि से पैदा हो उसे आहत नाद कहते हैं। इसे संगीत उपयोगी ध्वनि कहा जा सकता है। इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:-

1. जब किसी वस्तु को दूसरी वस्तु से आघात या चोट किया जाये जैसे तबला, ढोलक, नगाड़ा आदि हाथ आदि की चोट से जो आवाज़ उत्पन्न होती है उसे आहत नाद कहते हैं।

2. जब किसी संघर्ष, या रगड़ से जो आवाज़ निकले जैसे वायलिन सारंगी आदि गज़ से, सितार पर मिजराब से, उसे आहत नाद कहते हैं।

3. जब किसी वस्तु में हवा प्रवेश करती है या स्पर्श करती है जैसे शहनाई, बीन, बांसुरी, हारमोनियम आदि हवा से और इसी प्रकार जब मनुष्य के कण्ठ में हवा प्रवेश कर गले की माँसपेशियों से कम्पित होती हैं। वह आवाज़ आहत नाद कहलाती।

* * * * * *

पाठ -3

वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर

राग में प्रयोग होने वाले स्वरों में कुछ ऐसे स्वर होते है जिसमें राग का स्वरूप कायम करने में विशेष योगदान होता है। राग का विस्तार करते ऐसे स्वर जिनका प्रयोग बार-बार और जिन पर अधिक ठहराव दिया जाये उसे वादी स्वर कहते हैं। वादी स्वर का सबसे अधिक प्रयोग होने के कारण जीव स्वर, अंश स्वर, प्रधान स्वर, मुख्य स्वर और राग का राजा स्वर इत्यादि नामों से सम्बोधन किया जाता है और इसलिये राग का आरम्भ और समाप्ति इसी वादी स्वर पर होती है जैसे भुपाली राग में वादी स्वर गन्धार 'ग' है।

सम्वादी स्वर

राग का दूसरा महत्त्वपुर्ण स्वर सम्वादी कहलाता है। इसका प्रयोग वादी स्वर से कुछ कम पर बाकी स्वरों से ज्यादा किया जाता है। सम्वादी स्वर को वादी स्वर का परम सहायक होने के कारण इसे मन्त्री की उपाधि दी गई है। जैसे भुपाली राग में सम्वादी स्वर (धैवत 'ध') है।

अनुवादी स्वर

राग में सिर्फ वादी सम्वादी इन दो स्वरों से राग का स्वरूप नहीं बनता। इसलिये वादी और सम्वादी के साथ-साथ अनुवादी स्वर का राग में होना अतिआवश्यक है। वादी सम्वादी स्वरों के अतिरिक्त जो स्वर राग में प्रयोग किये जाते हैं। उन्हें अनुवादी स्वर कहते हैं। जैसे एक राज्य में राजा और मन्त्री के अतिरिक्त प्रजा का होना आवश्यक है उसी प्रकार एक राग में वादी सम्वादी के इलावा अनुवादी स्वरों का भी उतना ही महत्त्व है जैसे भुपाली राग में ग और ध के इलावा बाकी स्वर अनुवादी कहलाते हैं।

विवादी स्वर

विवादी स्वर का साधारणतः राग में प्रयोग नहीं किया जाता। इनके प्रयोग से राग की शुद्धता था स्वरूप बिगड़ने का भय होता है पर स्वर सिर्फ राग में विचित्रता और रंजकता बढ़ाने के लिये और बहुत थोड़े समय के

लिए कभी-कभी राग में उचित स्थान में प्रयोग किये जाते हैं इनका प्रयोग बड़ी सावधानी से किया जाना चाहिये नहीं तो राग का स्वरूप बिगड़ने का भय होता है। इन स्वरों को 'झगड़ालू' स्वरों की उपमा दी गई है।

वर्जित स्वर

वर्जित का अर्थ है 'मनाही' । जिन स्वरों को राग में प्रयोग करने की बिल्कुल मनाही हो अर्थात वर्जित हो उन्हें वर्जित स्वर कहते हैं, जैसे भूपाली राग में 'म' 'नी' वर्जित स्वर हैं। विवादी स्वर राग में कभी-कभी सुन्दरता के लिये प्रयोग किया जा सकता है परन्तु वर्जित स्वर कभी भी प्रयोग नहीं किया जा सकता।

* * * * * *

पाठ -4
राग, राग के नियम

राग :- राग शब्द का जन्म रन्जू धातु से माना गया है। जिस का अर्थ है प्रसन्न करना। वह आवाज़ (ध्वनि) जो स्वरों और वर्णो से विभूषित हो ओर मनुष्य के मन को आनंदित करे और जिस में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वर हों उस रचना को राग कहते हैं।

अभिनव राग मन्जरी में राग इस प्रकार है:-

''स्वर और वर्ण से विभूषित ध्वनि जो मनुष्य के मन का रंजन करे, राग कहलाता है।''

राग के नियम:-

1. राग में रन्जकता का होना आवश्यक है।
2. राग में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वर होने चाहियें।
3. राग में 'स' स्वर कभी भी वर्जित नहीं होना चाहिये क्योंकि यह सप्तक का आधार स्वर है।
4. राग में 'म' और 'प' स्वर इकठ्ठे वर्जित नहीं होते, अगर किसी राग में 'प' स्वर वर्जित है तो म स्वर अवश्य होगा।
5. राग में आरोह अवरोह थाट, जाति, वादी सम्वादी, पकड़, समय आदि का होना आवश्यक है।
6. राग किसी थाट से उत्पन्न होना चाहिये।
7. राग में स्वरों दोनों रूप (कोमल, तीव्र) इकठ्ठे नहीं प्रयोग करने चाहियें।
8. राग में स्वर क्रम अनुसार नहीं होते ।

******

पाठ -5
पकड़

वह स्वर- समूह जिस से किसी राग की पहचान हो, बोध हो उस को पकड़ कहते हैं। जैसे भूपाली राग की पकड़ हैं:- पग, रेग स रे ध़ स। पकड़ राग के आरोह - अवरोह के बाद गाई या बजाई जाती हैं। हरेक राग की पकड़ अलग -अलग होती है। गाते- बजाते समय राग की पकड़ राग में बार-बार प्रयोग करते हैं। पकड़ को राग का मुख्य अंग भी कहते हैं।

जैसे राग भुपाली की पकड़ हैं

ग रे स, सा ध़, सा रे ग, प ग, ध पा ग रे स

इस पकड़ से हम पहचाने जाते हैं कि यह भुपाली राग है।

* * * * * *

पाठ -6
श्रुति

वह सूक्ष्म आवाज़ जिसे हम स्पष्ट रूप से सुनकर समझ सकें और अलग से पहचान सकें उसे श्रुति कहते हैं।

शास्त्रकारों ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है।

श्रूयते इतिश्रुति

अर्थात वह आवाज़ जिसे हम सुन सकें और सपझ सकें उसे श्रुति कहते हैं। 'अभिनव राग मन्जरी' में इस की परिभाषा इस प्रकार दी है, ''वह आवाज़ जो गीत में प्रयोग की जा सके और एक दूसरे से अलग पहचानी जा सके उसे श्रुति कहते हैं। '' या श्रुति वह ध्वनि है जो संगीत के लिए उपयोगी हो, कानों को साफ़ साफ़ सुनाई पड़े एक दूसरे से अलग पहचानी जा सके और सुनने में मधुर हो। बाईस श्रतियों के नाम निम्नलिखित हैं।

1. तीव्रा	2. कुमुदवती	3. मन्दा
4. छन्दोवती	5. दयावती	6. रंजनी
7. रकितका	8. रोद्री	9. क्रोधी
10. वजिका	11. प्रसारिणी	12. प्रीति
13. गार्जनी	14. क्षिति	15. रकता
16. संदीपनी	17. आलापनी	18. मदन्ती
19. रौहिणी	20. रम्या	21. उग्रा
22. क्षोभणी		

बाईस श्रुतियों का गायन वादन में प्रयोग कठिन है। अत: इन बाईस श्रतियों में से सात को चुना गया और इन्हें स्वर का नाम दिया गया। भारतीय संगीत इन सात स्वरों पर ही आधारित है।

* * * * * *

पंडित विष्णु नारायण भात्तखण्डे

(1860-1936)
चित्र न .1

पाठ -7
पंडित विष्णु नारायण भात्तखण्डे

श्री विष्णु नारायण भात्तखण्डे जी ने संगीत कला की प्रगति हेतु स्तम्भ की भुमिका निभाई। उन्होंने अपना सारा जीवन संगीत कला की निष्काम सेवा करते हुये हमेशा के लिये संगीत प्रेमियों के हृदय में अपनानाम अंकित कर दिया। संगीत जगत अच्छे बहुमूल्य कार्यों के लिये उनका सदा कि लिए ऋणाी रहेगा।

श्री विष्णु नारायण भात्तखण्डे का जन्म 10 अगस्त सन् 1860 ई: को बम्बई प्रांत के बालकेश्वर नामक स्थान में कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ था। उन्हें अपन पिता से जिन्हें संगीत से विशेष प्रेम था संगीत सीखनेकी प्रेरणा मिली। आप स्कूली शिक्षा के साथ-साथ संगीत शिक्षा भी ग्रहण करते रहे। उन्होंने सितार, गायान और बाँसुरी की शिक्षा प्राप्त की और तीनों पर अच्छा अभ्यास किया। सेठ बल्लमदास से सितार, गुरू राव बुआ बेलबाथकर, जयपुर के मुहम्मद अली खाँ, ग्वालियर के पं. एक नाभ आदि गुरूजनों से गायन सीखा। सन् 1883 में बी.ए. सन् 1890 में एल.एल.बी. की परीक्षाएं पास की। कुछ समय तक आप वकालत भी करते रहे किन्तु संगीत के महान प्रेमी का मन वकालत करने में नहीं लगा।

सन् 1904 में भात्तखण्डे जी ने पहली संगीत यात्रा की। उन्होंने सबसे पहले दक्षिण की यात्रा की। वहाँ उन्होंने बड़े-संगीतकारों से विचार-विमर्श किया और दुर्लभ प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया। इन्होंने उत्तरी भारत का दौरा किया। वहाँ भी संगीतकारों ज्ञान-गोष्टियां की और प्राचीन ग्रन्थों का अध्यन किया। विभिन्न रागों के बहुत से गीत इकठ्ठे किये और उन के स्वरलिपियाँ भात्तखण्डे क्रमिक पुस्तक '6' भागों में संग्रहित कर संगीत के लिये अथाह भण्डार इकठ्ठा किया।

क्रियात्मक संगीत को लिपिबद्ध करने के लिये भात्तखण्डे जी ने सरल और नवीन स्वरलिपि पद्धति की रचना की जो भात्तखण्डे स्वर लिपि पद्धति के नाम से प्रसिद्ध है। इसके राग वर्गीकरण एवं नवीन प्रकार थाट-राग वर्गीकरण को प्रचारित करने का श्रेय भात्तखण्डे जी को है। उन्होंने वैज्ञानिक ढंग से सभी रागों को 10 थाटों में विभाजित किया।

जिस समय भारत में रेडियो का प्रचार नहीं था उस समय भात्तखण्डे जी ने 1916 में बड़ौदा नरेश की सहायता से एक विशाल संगीत सम्मेलन करवाया। इन्होंने कई संगीत-विद्यालयों की स्थापना की उन में से मुख्य है मैरिस म्युजिक कालेज लखनऊ, माधव संगीत विद्यालय ग्वालियर।

उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की। हिन्दुस्तानी संगीत (पद्धति क्रमिक पुस्तक मातिव्य 6 भागों में) भात्तखण्डे संगीत शास्त्र 4 भागों में अभिनव राग मन्जरी, लक्ष्य संगीत, स्वर मालिका।

इसके अतिरिक्त पण्डित जी ने अनेक ख्याल गीतों की रचना, हररंग उपनाम से की, 250 के लगभग लक्ष्ण गीतों की रचना 'चतुर' उपनाम से की।

संगीत शास्त्र, क्रियात्मक संगीत, खोज प्रचार एवं संगीतकार ने अपना सारा जीवन संगीत के लिये जितना कार्य किया उसका कोई अन्य उदाहरण मिलना कठिन है।

सन् 1933 में हुए पक्षाघात के रोग से तीन वर्ष तक बीमार रहे और 19 सितम्बर सन् 1936 को उनका स्वर्गवास हो गया। देश में संगीत के विद्यार्थी और प्रेमी हर वर्ष उन की स्मृति में यह दिन मनाते हैं। संगीत जगत सदा उनका ऋृणी रहेगा।

पाठ -8
सितार बजाने के विशेष संकेत

सितार का चित्र इस पुस्तक में दिया गया है। इसे देखकर समझ कर संकेत पढ़े जायें।

मिज़राब के बोलों को निकालते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि जिस तार पर मिज़राग लगा रहें हैं उस तार की ध्वनि बाकी तारों से प्रबल होनी चाहिये क्योंकि बाज की तार के अतिरिक्त बाकी तारें सिर्फ सहायक और गूँज देने के लिये होती हैं। चिकारी की तार को छोड़ कर।

सितार में मिज़राब के बोलों का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसलिये विद्यार्थियों को मिज़राब के बोलों का ध्यान रखते हुए हाथ चलाने का अभ्यास करना चाहिये। इसके अतिरिक्त अपने वाद्य को ठीक ढंग से पकड़ कर बैठना अपने अध्यापक ये सीखना चाहिये।

मिज़राब से बोल निकालने की विधि

1. सितार के मुख्य दो बोल हैं दा और रा। इनके अलग-अलग बजाने के तरीकों से अलग-अलग बोल निकलते हैं।

1. 'दा' :- जब मिज़राब बाहर से अन्दा की तरफ (अपनी तरफ लाते हुए तार पर प्रहार करते हैं तो 'दा' का बोल निकलता है। इस प्रहार को 'आकरश (आकर्ष) प्रहार कहते हैं।

2. 'रा':- इसके विपरीत जब बाज की तार पर चोट करते हुये ऊँगली अन्दर से बाहर की तरफ जाती है तो 'रा' का बोल निकलता है। इस को अपकर्ष प्रहार कहते हैं।

3. दिर:- आकर्ष और अपकर्ष का इकठ्ठ प्रहार करनें से दिर बोल निकलता है।

4. दार :- 'दा' बजाने के बाद 'र' का आधा समय छोड़ देने से बाकी आधा समय में 'र' बजाने से 'दार' का बोल निकलता है। इसको इस तरह लिखते हैं :- दा, ऽर।

5. द्रा :- दा और रा को मिलाकर इकठ्ठ बजाने से 'द्रा' का बोल निकलता है।

1. अलंकार

आरोह :- स रे ग म प ध नी सं

दा रा दा रा दा रा दा रा

अवरोह :- सं नी ध प म ग रे स

दा रा दा रा दा रा दा रा

2. अलंकार

आरोह :- सम रेरे गग मम पप धध नीनी संसं

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह :- संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

3. अलंकार

आरोह :- सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह :- संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

पाठ -9
राग भूपाली

साधारण जान पहचान :-

यह राग कल्याण थाट से पैदा होता है। इसमें सारे स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग में म तथा नी स्वर वर्जित हैं। इसलिए पाँच स्वर होनेके कारण इसकी जाति औड़व-औडव है। इस राग का वादी स्वर ग तथा संवादी स्वर ध है। राग के गाने तथा बजाने का समय रातका दूसरा प्रहर है। राग में न्यास के स्वर ग और प हैं। यह पूर्वागंवादी राग हैं।

आरोह स रे ग प ध सं

अवरोह सं ध प ग रे स

पकड़ स रे, स स ध़, स रे ग, प ग, ध प, ग रे स।

अलाप :- 1. ग रे सा ध़ , सा रे ग, प ग ध प ग रे स ।

2. सा सा ध़, सा रे ग, रे ग सा रे ग, प ध सा रे ग, ग प, पग रे ग, रे सा।

3. ध़, स रे ग स, रे स ग रे स, प ग रे स, प ग ध प ग स, प ग प ग रे सं स ध़ स रे ग।

राग भूपाली द्रुत अथवा रजाखानी गत तीन ताल

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
×	2	0	3
स्थाई		सं संस धध पप	ग रेरे स रे
ग - ग रे	ग रेरे स स	दा दिर दिर दिर	दा दिर दा रा
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा	ग रेरे गग पप	ग पप ध ध
स – ध प	ग रेरे स स	दा दिर दिर दिर	दा दिर दा रा
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा		सं धध सं सं
अंतरा			
सं – गं रें	सं धध प प	प राग पप धध	दा दिर दा रा
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा	दा दिर दिर दिर	ध पप ग रे
			ध पप ग र
ग – ध ध	ग रेरे स स		
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा		

भूपाली राग के तांड़े

1. सरे गऽ रेग पऽ गप धप गरे सऽ – – सत
2. सस रेरे गग पप धध संसं धध पप – – गत
3. सरे गग रेग पप गप धध पध संसं रेरे
   सरे गग रेरे सस धध पप गग रेरे सरे गग
   रेग पप गऽ सरे गग रेग पप गऽ सरे गग रेग रेरे
   पप गप _____सम –

पाठ -10

राग दुरगा

साधारण जान पहचानः-

यह राग बिलावट थाट से पैदा होता है। इसमें सारे स्वर शुद्ध लगते हैं। सग में ग और नि स्वर वर्जित हैं। राग की जाति औड़व-औड़व है। राग का वादी स्वर म और संवादी स्वर स है। राग का समय रात का दूसरा प्रहर है।

आरोह स रे ग प ध सं

अवरोह सं ध प ग रे स

पकड़ स रे म प ध, म रे, ध़ स।

अलाप :-

1. स रे ------ म ----- रे स ध़ ध़ स रे स।

2. स रे म ----- प --- ध -------- सं ध प ----- म प म रे, ध़ स -----

3. ध़ सां रे ---- ध सां ---- रे स रे -- म रे ध --- स -- धप ध म पध सा, रे ध-सां-रे सां ध-म रे ग प ध- म रे, ध़ सां

राग दुरगा द्रुत अथवा रजाखानी गत (तीन साल)

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
×	2	0	3
स्थाई		ध संस ध प	म मम प ध
		दा दिर दा रा	दा दिर दा रा
म ऽ रे स	ध ध्ध स स		
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा		
		स रेरे म रे	म पप ध प
		दा दिर दा रा	दा दिर दा रा
म ऽ रे स	ध धध स		
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा		

अंतरा		म मम प ध	सं धध सं सं
		दा दिर दा रा	दा दिर दा रा
धं – रें सं	ध धध सं सं		
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा		
		सं रेरे ध सं	प धध म प
		दा दिर दा रा	दा दिर दा रा
ध संस ध प	म मरे रे स		
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा		

पाठ -11

ताल तीन

ताल की जान पहचानः-

तीन साल की 16 मात्राएँ हैं। इस का त्रीताल भी कहते हैं। इसके 4-4 मात्राओं के चार विभाग होते हैं। इस में 1,5, 13 वीं मात्रा के क्रमवार पहली, दूसरी और तीसरी पर ताली हैं। तीन साल की 9वीं मात्रा पर खाली है। यह तबले की ताल है। यह ताल गीत, शब्द और शास्त्रीय संगीत के साथ बजाई जाती है।

मध्य लय — तीन ताल

मात्रा	1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
ताल के बोल	धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
चिन्ह	×	2	0	3

रूपक ताल

ताल की जान-पहचानः- रूपक ताल की कुल सात मात्राएँ हैं। इन मात्राओं हम तीन भागों में बाँटते हैं। पहले भाग में 3 मात्राएँ दूसरे और तीसरे भाग में दो-दो मात्राएँ होती हैं। पहली मात्रा पर सम या खाली चौथी पर पहली ताली और छठी पर दूसरी ताली होती है। यह ताल ख्याल, गीत, गज़ल आदि के साथ बजाई जाती हैं।

रूपक ताल

मात्रा	1 2 3	4 5	6 7
बोल	तिं तिं ना	धिं ना	धिं ना
चिन्ह	×	1	2

तृतीय भाग

(आठवीं श्रेणी के लिए)

पाठ-1

जाति किस को कहते हैं

औड़व, षाड़व, सम्पूर्ण, उपजातियाँ

जाति :- सप्तक के सात स्वरों में से जितने भी स्वर लगते हैं उनके प्रयोग से जाति निर्धारित होती है क्योंकि किसी राग में कम से कम 5 स्वर और अधिक से अधिक सात स्वर लगते हैं। इन स्वरों की भिन्न भिन्न गिनती ही जाति कहलाती है। जाति में हमें यह पता चलता है कि किस राग में कितने स्वर लगते हैं। राग में प्रयोग होने वाले स्वरों की विभिन्न गिनती के आधार पर मुख्य तीन जातियाँ मानी जाती हैं :-

1. सम्पूर्ण जाति
2. षाड़व जाति
3. औड़व जाति

1. सम्पूर्ण जातिः- जिस राग में पूरे सात स्वरों का प्रयोग हो उसे सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

2. षाड़व जातिः- जिस राग में पूरे सात स्वरों का प्रयोग हो उसे सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

3. औड़व जातिः- जिस राग में सप्तक के कोई दो स्वर वर्जित करके कोई भी पाँच स्वर प्रयोग हों उस राग को औड़व जाति का राग कहते हैं।

इन तीन मुख्य जातियों के अतिरिक्त आरोह अवरोह के आधार से राग में प्रयोग होने वाले स्वरों की गिनती के आधार पर कुल 9 उपजातियाँ बनती हैं।

इन का वर्णन इस प्रकार है :-

1. सम्पूर्ण - औड़व जाति
2. सम्पूर्ण - षाड़व जाति
3. सम्पूर्ण - सम्पूर्ण जाति
4. षाड़व - औड़व जाति
5. षाड़व - षाड़व जाति
6. षाड़व - सम्पूर्ण जाति
7. औड़व - औड़व जाति
8. औड़व - षाड़व जाति
9. औड़व - सम्पूर्ण जाति

1. सम्पूर्ण औड़व जातिः- जिस राग के आरोह में पूरे सात स्वर और अवरोह में कोई पाँच स्वर लगें उसे सम्पूर्ण-औडव जाती का राग कहते हैं।

2. सम्पूर्ण षाड़व :- जिस राग के आरोह में पूरे सात स्वर और अवरोह के बीच छः स्वर लगें उसे सम्पूर्ण-षाड़व जाति राग कहते हैं।

3. सम्पूर्ण - सम्पूर्ण :- जिस राग के आरोह-अवरोह में सात-सात स्वर लगे हों उसे सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

4. षाड़व-औड़व :- जिस राग के आरोह में छः स्वर और अवरोह में पाँच स्वर लगें उसे षाड़व-औड़व जाति का राग कहते हैं।

5. षाड़व- षाड़व :- जिस राग के आरोह- अवरोह में छः छः स्वरों का प्रयोग हो, उसे षाड़व-षाड़व जाति का राग कहते हैं।

6. षाड़व-सम्पूर्ण :- जिस राग के आरोह में छः स्वर और अवरोह में सात स्वर लगें उसे षाड़व-सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

7. औड़व-औड़व :- जिस राग के आरोह- अवरोह में पाँच - पाँच स्वरों का प्रयोग हो, उसे औड़व -औड़व जाति का राग कहते हैं।

8. औड़व-षाड़व :- जिस के आरोह में पाँच स्वर और अवरोह में छः स्वरों का प्रयोग हो उसे औड़व-षाड़व जाति का राग कहते हैं।

9. औड़व- सम्पूर्ण :- जिस राग के आरोह में पाँच स्वर और अवरोह में पूरे सात स्वर लगें उसे औड़व-सम्पूर्ण जाति का राग कहते हैं।

* * * * * *

पाठ-2

मात्रा, विभाग, सम, ताली, खाली, आवर्तन

संगीत में समय के माप का सबसे छोटा पैमाना मात्रा है। जिस प्रकार तौल नापने के लिये ग्राम, किलोग्राम लम्बाई नापने के लिए मीटर, सैं. मीटर समय नापने के लिये घण्टा, मिनट, सैंकिण्ड आदि हैं। उसी प्रकार संगीत के समय नापने के लिये मात्रा बनाई गई है। संगीत में मात्रा एक ऐसी इकाई है जिस के माध्यम से ताल को मापा जा सकता है। मात्राओं के बीच का समय अपनी गायन वादक इच्छा अनुसार कम या ज्यादा कर सकते हैं। हरेक ताल की अलग-अलग मात्रायें होती हैं। जैसे कहरवा ताल की आठ तीन ताल की 16 मात्रायें होती हैं।

सम

जिस मात्रा से ताल आरम्भ की जाती है उसे सम कहते हैं। ताल का सम ताल की पहली मात्रा पर होता है। ताल में सम का विशेष महत्त्व होता है और इस पर विशेष प्रकार का ज़ोर दिया जाता है जिस से और मात्राओं में अलग पहचान हो जाती है। किसी भी गायन या वादन के साथ ताल की संगति सम से प्रारम्भ और समाप्ति भी सम पर ही की जाती है। सम की पहचान के लिये तालिपि में का चिन्ह लगाया जाता है।

विभाग

हरेक ताल के बोलों को आसानी के लिये कुछ छोटे-छोटे भागों में बाँट लिया जाता है उसे विभाग कहा जाता है जैसे तीन ताल को सोलह मात्राओं के एक पूरे आवर्तन चक्कर को चार-चार मात्रा के चार भागों में बाँटा गया है। इस प्रकार तीन साल के चार विभाग हुये। प्रत्येक ताल के विभागों

दिखाया जाता है। पर सम से कुछ कम दबाव से दिखाते हैं। ताली को भरी भी कहते हैं। लिखने में ताली का चिन्ह 2,3,4 आदि संख्या का प्रयोग करता हैं।

खाली

जब हम ताल बजाते समय जैसे ताली आने पर ताल बजाते हैं या आवाज़ करते हैं उस के उलट खाली पर हम हाथ को हल्का सा हवा में झटक देते हैं। अर्थात आवाज़ नहीं करते वह खाली होगी। खाली का स्थान आमतौर पर ताल की मात्राओं के बीच में होता है। जैसे तीन साल में 9वीं मात्रा पर खाली है। ताल में लिपि लिखते समय खाली को '0' के चिन्ह से दिखाया जाता है।

आवरन आवर्तन

जब किसी ताल को बजाते हुये उस की पूरी मात्रायें बजा कर फिर सम पर आते हैं, उसे आवरतन कहते हैं। जैसे तीन ताल की 16 मात्राओं को एक बार पूरा बजाने को आवरतन कहेंगे। जैसे घड़ी की सुईयाँ 12 बजा कर अपना पूरा चक्कर करके फिर 12 बजे तक पहुँचे, एक आवर्तन या चक्कर कहलायेगा। गाने बजाने के साथ-साथ यह आवर्तन चलता रहता है। जब तक गाना-बजाना खत्म नहीं होता, ताल का आवर्तन चलता रहता है।

******

पाठ-3

वादक के गुण और अवगुण

संगीत का प्रत्यक्ष सम्बन्ध श्रोता को आनन्द प्रदान करना है। कोई भी गायक, वादक या नर्तक अपनी कला के द्वारा श्रोताओं को प्रसन्न करता है, तभी वह कुशल संगीतज्ञ कहलाता है। किसी भी कार्य को करने के कुछ नियम होते हैं जिनके आधार पर कोई भी कार्य कुशल ढंग से सम्पन्न किया जा सकता है। समय और स्थान के परिवर्तन से कोई भी गुण अवगुण बन सकता है। एक साधारण गायक या वादक श्रोताओं पर अपना प्रभाव तभी डाल सकता है यदि उसे लय, ताल और साज़ का पूरा ज्ञान हो। आधुनिक विद्यार्थी मंच पर शीघ्र प्रसिद्धि के लिए वादक के प्रत्येक अंग का अपनी इच्छा अनुसार अभ्यास करते हैं। वादक को वादक के गुण और अवगुण की ओर ध्यान देना चाहिये और अवगुणों का प्याग करना चाहिये।

वादक के गुणः-

1. वादक को अपने साज़ का पूरा ज्ञान होना चाहिये।
2. साज़ को ठीक ढंग से बजाने के लिए मुद्राओं का पूरा ज्ञान होना चोहये।
3. उसे साज़ पर उँगलियों का प्रयोग सही ढंग से करना चाहिये।
4. सप्तक के स्वरों के शुद्ध, कोमल तथा तीव्र का ज्ञान होना चोहये।
5. लय और ताल का सही ज्ञान होना चाहिये।
6. राग पेश करते समय राग का पूरा ज्ञान होना चाहिये।
7. उसे प्रस्तुति के समय आत्मविश्वास और निर्भय होना चाहिये।
8. उसे शास्त्रीय संगीत और क्रियात्मक संगीत का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये।
9. उसे परिश्रमी, साधक और कल्पनाशील होना चाहिये।

वादक के अवगुण

1. अपने साज़ की पूरी जानकारी न होना।
2. ग़लत ढ़ंग से बैठकर साज़ बजाना।
3. उंगलियों का प्रयोग ठीक ढंग से न करना।

4. सप्तक के स्वरों के शुद्ध, तीव्र और कोमल रूपों की जानकारी न होना।

5. प्रस्तुत राग की जानकारी न होना।

6. संगीत के शास्त्रीय और क्रियात्मक रूपों का उचित ज्ञान न होना।

7. वादक का आत्मविश्वास डगमगाना और डर कर साज़ बजाना ।

पाठ-4

थाट, नियम, भात्तखण्डे जी के दस थाट

सात स्वरों के उस समूह को जिस में राग पैदा करने की शक्ति हो, थाट कहते हैं। थाट को मेल भी कहा जाता है।

अभिनव राग मन्जरी में इस की परिभाषा इस प्रकार है:- मेल या थाट स्वरों के उस समूह को कहते हैं जिसमें राग पैदा करने की शक्ति हो।

लक्षण या नियमः-

1. हरेक थाट में हमेशा सात स्वर होने चाहिये।
2. थाट में स्वर हमेशा क्रम में हाने चाहिये जैसे- स रे ग म प ध नी।
3. थाट सम्पूर्ण होने के कारण आरोह से ही किसी थाट का पता चल सकता है। इसलिए

   अवरोह की आवश्यकता नहीं है।
4. थाट में एक स्वर के दोनों रूप नहीं प्रयोग किये जा सकते।
5. थाट गाया-बजाया नहीं जाता इसलिये इसमें वादी सम्वादी पकड़ते समय जाति आदि की आवश्यकता नहीं होती।
6. थाट में रन्जकता का होना आवश्यक नहीं है।
7. थाट का नाम उसके अन्तर्गत आये किसी प्रसिद्ध राग के नाम पर रखा जाता है।
8. थाट को जनक थाट भी कहा जाता है।
9. थाटों की संख्या 10 मानी जाती है।
10. गणित के आधार पर केवल 72 थाट बन सकते हैं इसमें कम या ज्यादा नहीं।

श्री विष्णु नारायण भात्तखण्डे जी के दस थाट

1. बिलावट थाटः- इस थाट में सारे स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

2. कल्याण थाटः- इस थाट में म तीव्र बाकी सभी स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे- स रे ग म́ प ध नी।

3. खमाज थाटः- इस में नी कोमल बाकी के स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

4. काफी थाटः- इसमें ग और नी कोमल बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

5. आसावरी थाटः- इस थाट में ग ध नी कोमल बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

6. भैरवी थाटः- इस थाट में रे ग ध नी कोमल और बाकी शुद्ध स्वर लगते हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

7. भैरव थाटः- इस थाट में रे, ध कोमल और बाकी सारे स्वर शुद्ध हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

8. पूर्वी भाटः- इस थाट में रे, ध कोमल, म तीव्र और बाकी स्वर शुद्ध हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

9. मारवा थाटः- इस थाट में रे कोमल म तीव्र बाकी सारे स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे-स रे ग म प ध नी।

10. तोड़ी थाटः- इस थाट में रे ग ध कोमल और म तीव्र बाकी सारे स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे- स रे ग म प ध नी।

* * * * * *

पं. रविशंकर

चित्र नं: 2

पाठ-5

पंडित रविशंकर

आधुनिक काल के सुप्रसिद्ध वादक सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि सारे विश्व भर में इनकी प्रतिभा को जाना जाता है। अपनी कलात्मक प्रतिभा के दम से पंडित जी ने भारतीय वाद्य सित्ार को विदेशों में भी प्रसिद्धी दिलवाई।

पंडित रविशंकर जी का जन्म 7 अप्रैल सन् 1920 को वाराणसी में हुआ। इनके पिता श्याम शंकर अपने समय के माने हुसे विद्धान थे। आप चार भाईयों में से सबसे छोटे थे और इनके सबसे बड़े भाई उदयशंकर जो एक नृत्यकार थे उनका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। इसलिये आप भी नृत्य की शिक्षा लेने लगे। लगभग दस साल की उम्र तक नृत्य मण्डली में अपने भाई के साक्ष विदेशों का दौरा किया। यात्रा के दौरान उस्ताद अलाऊदीन खाँ के सम्पर्क में आये। उस्ताद अलाऊदीन खाँ ने इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर अपना शिष्य बना लिया और सितार सिखाने लगे।

पंडित जी की रूची धीरे-धीरे नृत्य से हट कर सितार की तरफ होने लगी। फिर ये मध्य प्रदेश में आकर उस्ताद अलाऊदीन के घर में ही रहने लगे और सितार की शिक्षा लेने लगे। पंडित जी की लगन, तपस्या और गुरू भक्ति को देख उस्ताद जी ने सितार की प्रत्येक जानकारी दी। इतना ही नहीं सन् 1941 ई. में अपनी पुत्री का विवाह अन्नपूर्णा देवी, जो स्वयं भी सितार और सुरवहार में निपुण थी, कर दिया।

आप अपनी वादन शैली में स्वरों की शुद्धता, स्वरों की मधुरता में परम्परागत नियमों का पालन करते हैं। विस्तारपूर्वक आलाप जोड़ आलाप करने के बाद ही पहले मसीत खानी गत फिर रजा खानी गत बजाते हैं। अपने वादन

में वीणा और गायकी अंग का मिश्रण करके कृन्तन, जमजमा खटका और लयकारी आदि का स्पष्ट प्रयोग किया। अपनी वादन शैली में लरज की तार भी आरम्भ की। सितार शैली की अतिरिक्त गायन शैली के साथ सितार बजाने की अपने नई खोज की। पंडित जी ने वाद्य-वृन्द के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया कुछ विदेशी, वाद्यों को भारतीय वृन्द-वादन में शामिल किया। आपके वाद्य वृन्द रचना का संग्रह 'रविशंकर के और क्रैस्ट्रा' नामक पुस्तक में मिलता है।

पंडित जी विदेशों में भी जैसे अमेरिका, इंग्लैड, जापान, रूस आदि में अपना प्रोग्राम देते हैं और प्रशंसा प्राप्त करते हैं। इनके संगीत का पश्चिमी में भी बहुत प्रभाव पड़ा। पॉप ग्रुप भी हारमोनियम और सितार की बारीकियों को समझने लगे। इनको भारत का महान सांस्कृतिक दूत कहा गया। पंडित जी को 'बिल बोर्ड' के सम्पादक ने अमेरिका में 'साल का कलाकार' नामज़द किया। पंडित जी के रागों के कई रिकार्ड बने और बहुत बिक्री के कारण आपको 'ऐमरी आवर्ड' दिया गया। 1962 ई. में संगीत नाटक अकेडमी से पुरूस्कार मिला। सन् 1975 में अकादमी की फैलोशिप प्राप्त हुई। 1977 में भारत सरकार की तरफ से 'पद्म भूषण' और सन् 1981 में 'सवेत्तिम अलंकरण पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

पंडित जी ने बंगला फिल्म काबुलीवाला, पाथरे पंचाली, हिन्दी फिल्म अनुराधा, अंग्रेजी फिल्में 'दी चेरीटेल' और 'दीफलूयर एण्ड दि दरी'' का संगीत निर्देशन किया।

मोहन कौंस, तिलक श्याम बैरागी परमेश्वरी रंगेश्वरी आदि नवीन रागों की रचना की।

1962 ई. में किन्नर स्कूल आफ म्यूजिक की स्थापना की।

पंडित जी ने संगीत सम्बंधी व्याख्या और स्वै-जीवनी पुस्तक, 'माई म्यूजिक माई लाइफ' अंग्रेजी भाषा में लिखी है।

पंडित रविशंकर के कई शिष्य हुये जैसे ऊमाशंकर मिश्र, जय बोस, शमीम अहमद, गोपाल कृष्ण आदि। इसके अतिरिक्त बीटल गायक जार्ज हैरिसन आदि पश्चिमी गायक भी हैं।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि आप आधुनिक काल में पश्चिमी और भारत में संगीत और उसके गौरव को सूर्य की रोशनी की तरह फैला रहे हैं और संगीत को चार चाँद लगा रहे हैं।

******

. . .
. . .

पाठ-6

भात्तखण्डे जी की स्वर लिपि

जैसे हिन्दी पंजाबी आदि भाषा में व्याकरण के चिन्हों आदि की सहायता से भाषा को समझा जा सकता है, कि क्या लिखा गया है, ठीक उसी प्रकार संगीत में विशेष चिन्हों की सहायता से संगीत की संगीतक भाषा को उसके चिन्हों से समझा जा सकता है, इन विशेष चिन्हों को स्वरलिपि कहते हैं।

भारत में दो प्रकार की पद्धतियों का प्रचलन हैं।

1. उत्तर भारतीय संगीत पद्धति जो कि विष्णु नारायण भात्तखण्डे जी के नाम से जानी जाती है।

2. दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति जो कि विष्णु दिगम्बर पद्धति के नाम से जानी जाती है।

विष्णु नारायण भात्तखण्डे पद्धति

1. स्वर चिन्ह	**विवरण, चिन्ह**	**उदाहरण**
1. शुद्ध स्वर	कोई चिन्ह नहीं	स रे ग
2. कोमल स्वर	स्वर के नीचे लेटवीं रेखा	रे ग
3. तीव्र स्वर	स्वर के ऊपर खड़ी रेखा	मे
2. सप्तक चिन्ह		
4. मध्य सप्तक	कोई चिन्ह नहीं	स रे ग
5. मन्द्र सप्तक	स्वर के नीचे बिन्दु	नी ध प
6. तार सप्तक	स्वर पर ऊपर बिंदु	नीं धं पं
3. स्वर मान		
7. एक मात्र	कोई चिन्ह नहीं	स ध

8. आधी मात्रा	उल्टा अर्धचक्र	सध पग
9. एक मात्रा ठहरने के लिए सरगम	म–	ग– म–
10. एक मात्रा ठहरने के लिए	ऽ	दा रा दा ऽ

4.ताल लिपि

11. सम	×	धा गे न तिं ×
12. खाली	0	न के धि न 0
13. विभाग	।	1 2 3 4 ।
14. ताली संख्या	2, 3, 4,	
15. मात्रा	1 2 3 4	

नोट :– इस पद्धति में और भी चिन्हों का विवरण है। संगीत के नये विद्यार्थियों के लिये इतने काफी हैं ।

* * * * * *

पाठ–7

राग भैरवी

साधारण परिचय :

यह भैरवी थाट का राग हैं। इसमें रे, ग, ध नी कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। यह सम्पूर्ण, सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका मध्यम वादी तथा षड़ज संवादी स्वर हैं। इसका समय प्रात: काल का पहला पहर है।

आरोह — स रे ग म प ध नी सं

अवरोह — सं नी ध प म ग रे स

राग भैरवी आलाप

1. स रे ग ऽस रे स ऽ ध नी म
   ग म रे ऽ स ऽ।
2. नी स ग म प ध प नी ध प ऽ
   प ध म ऽ म ग स रे स ध नी स ऽ।
3. ग म ऽ ध नी सं ऽ रें सं ऽ ग रें सं ऽ
   नी सं रे सं ध प ऽ ध नी ध प ग ऽ
   स रे स ऽ ध नी स ऽ

राग भैरवी

द्रुत या रजाखानी गत

स्वर लिपि — तीन-ताल

1 2 3 4	5 6 7 8 2	9 10 11 12 0	13 14 15 16 3
स्थाई			नी सम गग मम दा दिर दिर दिर
प – ध प	नी ध ध पप मम	ग – गरे – रे स	ध नी नी सग सम
दा ऽ दा रा	दा दिर दिर दिर	दाऽ रदा ऽर दा	दा दिर दिर दिर
ग – रे ग	ग मम पप मम	ग –गरे –रे स	
दा ऽ दा रा	दा दिर दिर दिर	दाऽ रदा ऽर दा	

1 2 3 4	5 6 7 8 2	9 10 11 12 0	13 14 15 16 3
अन्तरा			ग मम ध ध नी नी दा दिर दिर दिर
स – रे सं	सं गं गं रे रे संसं	नी नी ध –ध प	प नी नी ध ध पप
दा ऽ दा रा	दा दिर दिर दिर	दाऽ रदा ऽरा दा	दा दिर दिर दिर
ग – म प	ध मम ग ग रे रे	ग– ग रे –रे स	
दा ऽ दा रा	दा रिद दिर दिर	दाऽ रदा ऽर दा	

राग भैरवी

तोड़े तीन-ताल

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
×	2	0	3
1.	सरे ग रे गम पम	पध पम ग रे सस	गत
	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	
2.		पध पम गम गरे	सरे सनी सरे गम
		दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर
3.	पध पम पध नीध	पम गम गरे स-	नीनी सस गग मम
	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दाऽ	दिर दिर दिर दिर
4. संनी संनी धप नीध	नी ध पम धप धम	मग पम पम ग रे	मग रेस नीस गम
दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर
5.		सं- सरे गरे सं-	संनी ध ध नीध पप
		दाऽ दिर दिर दाऽ	दिर दिर दिर दिर
धप मम पम ग ग	मग रेरे ग रे सस	मग रेरे गरे सस	-गत
दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	
6.		मम गग रेरे संस	धध पप मम ग ग
		दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर

* * * * * *

पाठ-8

राग खमाज

साधारण परिचय :

यह खमाज थाट पर राग है। इसके आरोह में नी शुद्ध तथा अवरोह में भी कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में रे स्वर वर्जित होने के कारण इसकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण है। ग वादी और नी संवादी स्वर हैं इसका समय रात का दूसरा पहर है।

आरोह	स ग, म प, ध नी, स ।
अवरोह	स नी ध प, म ग, रे स ।
पकड़	नी ध, मपध, मग

आलाप राग खमाज

1. स, नी स ग, म ग, प, म प म ग
   ग म प ध म ग, म ग रे स ।
2. नी स ग, म ग प ग म प ध नी
   ध प, प ध म ग , म ग म प, ग म
   प ध नी सं , ध सं नी ध प, म प ध म ग,
   म ग रे स
3. म, ग प, ग म प ध नी ध प, ग म प ध
   नी सं, नी सं ग रे स, नी स ध स नी, ध प
   ग म प ध नी ध प, प ध म प ध म ग,
   म ग रे स।

राग खमाज

द्रुत या रजाखानी गत

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
स्थाई	2		3
			ग मम प ध
			दा दिर दा रा
नी – स स	नी धध नी सं	नी ध प म	ग मम प म
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दा रा
ग – रे स	ग मम प ध	नी ध प म	
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा	

1 2 3 4	5 6 7 8	9 1० 11 12	13 14 15 16
	2	0	3
अन्तरा			
			ग मम नी ध
			दा दिर दा रा
नी- स स	नी ससं रे सं	नी नी ध ध	नी ससं नी सं
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दा रा
म – ध ध	ग मम प ध	नी ध प म	
दा ऽ दा रा	दा दिर दा रा	दा रा दा रा	

राग खमाज तोड़े

×	2	0	3
1. गम पध नीनी धप	पध मप गम ग–	गम ग–गम ग–	गत – –
दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दा–	
2. गम प– गम पध	नी–धनी धप मग	धम मग धम मग	गत ––
दिर दाऽ दिर दिर	दाऽ दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	
3. गम पध नीस नीस	धस नीध पध पम	गम गम प–गप	गम प–गम–सम
दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दाऽ दिर	दिर दिर दिर दिर
4. पग गम पध पध	नीसं धस नीध पम	गम गरे स–नीस	ग–सग म––सम
दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दिर दिर	दिर दिर दाऽ दिर	दाऽ दिर दिर दिर

* * * * * *

पाठ-9
ताल
एक ताल

ताल की जान-पहचान :

एक ताल की तरह बारह मात्राएँ होती हैं। ताल के दो-दो मात्रा के छः विभाग होते हैं। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली, 5वीं मात्रा पर दूसरी तालीं, 9वीं मात्रा पर तीसरी ताली, 11वीं मात्रा पर चौथी ताली तथा तीसरी और सातवीं मात्रा पर खाली मानते हैं। इस ताल का प्रयोग बिलम्बित बड़े और द्रुत छोटे ख्याल के साथ किया जाता है।

मध्य लय	एक ताल			एक गुन		
मात्रा	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
ताल के बोल	धीं धीं	धागे तिरकट	तू ना	क ता	धागे तिरकिट	धी ना
ताली चिन्ह	×	0	2		3 4	

झप ताल

ताल की जान-पहचान :

झप ताल की 10 मात्राएं होती है। इस ताल की मात्राओं को चार विभागों में बांटा जाता है। इन में से पहला और तीसरा विभाग दो-दो मात्राओं का तथा दूसरा और चौथा विभाग तीन-तीन मात्राओं का होता है। इस की पहली मात्रा पर समझो पहली ताली, तीसरी मात्रा पर दूसरी ताली, 8वीं मात्रा पर तीसरी ताली तया छेवीं मात्रा पर खाली होती है। यह ताल ख्याल गीत के साथ अधिक बजाया जाता है।

मध्य लय			झप ताल	एक गुन
मात्रा	1 2	3 4 5	6 7	8 9 10
ताल के बोल	धीं ना	धीं धीं ना	ती ना	धीं धीं ना
ताली चिन्ह	×	2	0	3

* * * * * *

पाठ–10
राग भैरवी
स्वर लिपि

धुन | स्थाई | ताल रूपक

1 2 3	4 5	6 7	1 2 3	4 5	6 7
0		सस रे रे	म – म	म –	पप ध ध
		दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर रदिर
म – रे	ग –	रे रे नी नी	स– रे	म –	गग रे रे
दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर
ग – रे	स–	सस रे रे	म–म	म –	पप ध ध
दा – रा	दा ऽ	दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर
सं– नी	ध –	पप ध ध	म–म	रे –	मम मम
दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर
ग – रे	स –				
दा ऽ रा	दा ऽ				

अंतरा

		पप ध ध	स – रे	सं –	नी नी ध ध
		दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर
सं – रे	स–	सस रे रे	ग – ग	रे –	रे रे ग ग
दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर
रें ऽ रे	सं –	ससं रे रे	नी – नी	ध –	ध ध नी नी
दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर
ध – ध	प–	पप ध ध	म – म	रे –	मम मम
दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर	दा ऽ रा	दा ऽ	दिर दिर
ग – रे	स –				
दा ऽ रा	दा ऽ				

राग खमाज
ताल दादरा
स्वर लिपि

धनु		स्थाई		द्रुत लय
1 2 3	4 5 6	1 2 3	4 5 6	
×	0	×	0	
स ग ग	स ग म	म प म	ग – –	
दा दा रा	दा दा रा	दा दा रा	दा ऽ ऽ	
नी ध ध	नी ध ध	म प म	ग – –	
दा दा रा	दा दा रा	दा दा रा	दा ऽ ऽ	
अंतरा 1				
नी नी नी	सं नी सं	नी ध म	ग रे स	
दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	रा दा रा	
स नी ध	नी ध प	ध प म	प म ग	
दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	
ग ग ग	ग ग ग	म प म	ग – –	
दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	रा दा रा	
अंतरा 2				
प म ग	नी ध प	सं नी ध	ग रे स	
दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	
नी – –	ध – –	म – –	ग – –	
दा ऽ ऽ	दा – –	दा ऽ ऽ	दा – –	
नी सं नी	सं नी सं	नी ध नी	ध नी ध	
दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	
सं सं नी	नी ध ध	म म ग	ग रे ग	
दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	दा रा दा	

सितार

1. खूंटी
2. तार गहन
3. अट्टी
4. पर्दा
5. डांड
6. गुल्लू
7. पहला तार
8. दूसरा तार
9. तीसरा तार
10. चौथा तार
11. पाँचवां तार
12. छठा तार
13. चिकारी
14. घुरच
15. मनका
16. तबली
17. कील या लंगोट
18. तूंबा

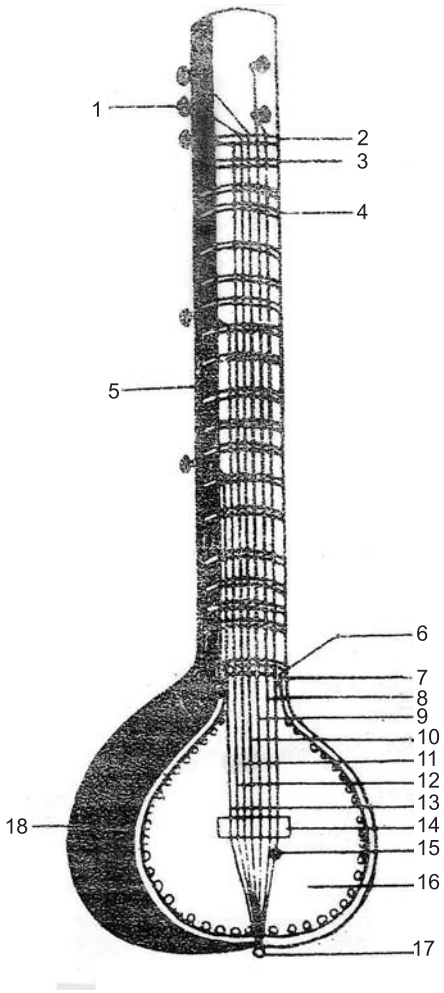

पाठ-11
सितार

सितार भारतीय संगीत का एक प्रमुख और लोकप्रिय तन्त्र वाद्य है। वर्तमान काल में सितार ने केवल भारत में ही लोकप्रियता हासिल नहीं की बल्कि विदेशों में भी यह बहुत ही लोकप्रिय वाद्यों में हैं।

सितार के अविष्कार के बारे में विभिन्न मतभेद हैं। एक मतानुसार सितार का जन्म प्रचीन वीणा वाद्य से हुआ। कुछ विद्वानों के मतानुसार प्राचीन 'त्रीतन्त्री' को ही आधुनिक काल में सितार कहा जाता है। सितार के अविष्कार के विषय में विद्वानों का मत है कि चौदवीं शताब्दी में अलाद्दउीन खिलजी के दरबार के सुप्रसिद्व संगीतज्ञ हज़रत अमीर खुसरों ने इसका आविष्कार किया। यह प्रचतिल धारणा है कि अमीर खुसरो ने प्राचीन वीणा तथा तानपूरे के संयोग से तीनों तारों वाले एक नये वाद्य का निर्माण किया जिसे सेहतार का नाम दिया। सेहतार एक फारसी भाषा का शब्द है। जो सेह और तार को मिला कर बना है। 'सेह' का अर्थ है तीन, इसलिये सेहतार शब्द का अर्थ है तीन तारों वाला वाद्य। धीरे-धीरे इन तीन तारों की संख्या बढ़कर छः और फिर सात हो गई।

प्रारम्भिक तीन तारों वाले सेहतार में लगभग दो से वर्ष तक कोई परिवर्तन नहीं आया। तानसेन के दामाद मिश्री सिहे के वंशज मसीत खाँ ने सितार पर तीन तार चढ़ा कर तारों की संख्या छः कर दी। कुछ समय यही छः तारों वाला सितार प्रचलित रहा। उसके बाद एक और तार जुड़ने से तारों की संख्या सात हो गई। पर्दों की संख्या 16 से बढ़कर 23 दो गई। मसीत खाँ ने एक नई वादन शैली का प्रचलन किया और उसके नाम पर ही गत का नाम मसीत खानी गत रखा गया। इसके पश्चात् इसके पुत्र रहीमसेन व पोते अमीर खाँ ने भी वादन शैली को काफी उन्नत किया। रजा खाँ ने सितार पर

द्रुत लय के एक बाज का अविष्कार किया जिसे 'पूरब बाज' अथवा रजाखानी गत कहा जाता है। जयपुर घराने के अमृतसेन और निहाल सेन ने भी सितार के रूप में काफी संशोधन किया। लकड़ी के स्थान पर लौकी का तुंबा लगाया और गूँज के लिये सितार पर एक छोटा तूंबा लगाया। इसी घराने के अन्तिम उस्ताद इमदाद खाँ ने सितार पर्दो की संख्या 23 से कम करके 19 की और सितार की झँकार के लिये तरब के तारों का प्रचलन किया और सितार पर मीड घसीट तोड़ें और झालों बजाने की प्रथा प्रारम्भ की। इनके पुत्र विलायत खाँ ने तूम्बे का आकार छोटा किया।

वर्तमान समय के दूसरे सुप्रसिद्ध सितार वादक पंडित रविशंकर ने सितार पर लरज़ का तार अति मन्द्र स्वर के तार बढ़ाया। आधुनिक युग के वाद्यों में सितार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसलिये इस वाद्य के विषय में कुछ विशेष जानकारी होनी चाहिये।

अंग वर्णन :-

1. तूम्बा :- सितार के नीचे का भाग जो गोल लौकी का होता है तूम्बा कहलाता है।

2. तबली :- तूम्बे का थोड़ा भाग काटकर पतली लकड़ी से ढक दिया जाता है।

3. कील :- तुम्बे के निचले भाग को जिससे सितार के तार बांधें जाते हैं कील कहते हैं।

4. घुरच :- तबली के ऊपर लकड़ी या हाथी दाँत की एक चौकी होती है जिस पर तार रखे जाते हैं। उसे घुरच या ब्रिज कहते हैं।

5. डांड :- सितार की लम्बी खोखली लकड़ी जिस में पर्दे बन्धे होते हैं उसे डांढ कहते हैं।

6. गुलू :- वह स्थान जहाँ तुम्बी और डांड जुड़ते हैं।

7. अटी :- सितार की डांड के ऊपर की तरफ हाथी दांत की एक पट्टी, जिस पर तार रखे जाते है, अटी कहलाती है।

8. तार गहन :- अटी के साथ ही लगी दूसरी पट्टी जिस में छिद्र होते हैं इस से तार गुजार कर खूँटी से बाँधे जाते हैं उसे तार गहन कहते हैं।

9. खूँटीयाँ :- सितार के तारों को कसने के लिये डांड में लकड़ी की चाबियां होती हैं उन्हें खूँटियाँ कहते है।

10. मनका :- हाथी दाँत या काँच से बने बतख या मोती की शकल जैसे बने मोती हो तारों में पिरोये होते हैं मनका कहलाते हैं । यह तारों को कसने आदि के काम आते हैं।

11. पर्दे:- पीतल या लोहे की सलाखें जो कुछ अर्ध चन्द्र आकार की होती हैं, डांड के ऊपर ताँत से बांधा जाता है पर्दे कहलाते हैं। यह गिनती में 16 से 24 तक होते हैं।

12. तरब :- सितार में पर्दे के नीचे कुछ पतले तार होते हैं, इनके लिये अलग छोटी-छोटी खूँटीयाँ होती हैं और छोटा सा घुरच होता है। उसे तरब कहते हैं। इन तारों से स्वर अधिक समय तक गुँजता है।

13. जवारी :- घुड़च या घुरच की ऊपरी सतह को जवारी कहते हैं। जवारी की सतह समान हो तो जवारी का खुलना कहा जाता है इससे तारों में अच्छी झँकार निकलती है।

14. मिज़राब :- लोहे की तार की बनी हुई अँगूठी जैसी वस्तु जिसे दाहिने हाथ की तर्जनी से फसाँकर सितार की तारों पर चोट करते हैं उसे मिज़राब कहते हैं।

सितार के तार, उनके मिलाने की विधि :-

सितार में आमतौर पर सात तारें होती हैं। पहला तार लोहे का होता है। इसे बाज का तार कहते हैं। इसका प्रयोग बाकी तारों की अपेक्षा कुछ ज्यादा होता है। इसे मन्द्र सप्तक के म़ से मिलाया जाता है।

दूसरा और तीसरा तार पीतल का होता है और यह दोनों मन्द्र सप्तक के स़ से मिलाते हैं इन्हें जोड़ी का तार कहते हैं।

चौथा तार पीतल का होता हैं। यह जोड़ी की तारों की अपेक्षा कुछ मोटा तार होता है इसे मन्द्र 'प' से मिलाते हैं। इसे लरज का तार कहते हैं।

पाँचवा तार बाज के समान लोहे या स्टील का होता है और मन्द्र पंचम 'प' से मिलाया जाता है। जिन रागों में पंचम स्वर वर्जित होता है। उनमे पँचम के तार म़ स्वर से मिलये जाते हैं।

छटा और सातवाँ दोनों चिकारी के तार होते हैं यह दोनों तार लोहे के होते हैं। पहला छटा तार मध्य 'स' से और दूसरा तार सातवाँ तार तार सप्तक के

'स' से मिलाया जाता है। झाला बजाने को चिकारी तार विशेष रूप में प्रयोग किये जाते हैं।

सितार को मुख्य तारों के अतिरिक्त पर्दो के नीचे बारीक लोहे के तार लगे होते हैं जिन्हें तरब की तारें कहते हैं। इन तरबों की संख्या 8 से 13 तक होती हैं। तरब के तार राग में लगने वाले स्वरों के अनुसार मिलाये जाते हैं। यह तार बजाये नहीं जाते सिर्फ झंकार पैदा होने के लिये होते हैं।

सितार के बोल और निकालने की विधि :-

सितार के मुख्य दो बोल हैं दा और रा

दा :- जब मिज़राब बाहर से अन्दर लाते हुये तार पर प्रहार करते हैं और ऊँगली अपनी ओर खींच लेते हैं तो दा का बोल निकलता है।

रा :- इसके उलट जब तार ना बाहर की तरफ प्रहार करते हैं तो 'रा' का बोल निकलता है।

* * * * * *

पाठ-12

छठी, सातवीं और आठवीं के पाठ्यक्रम की सब तालों की दुगुन

ताल दादरा (दुगुन)

1	2	3	4	5	6
धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
×				0	

ताल कहरावा (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8
धागे	नाति	नके	धिना	धागे	नाति	नक	धिना
×				0			

ताल रूपक (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7
तींतीं	नाधी	नाधी	नाती	तींना	धींना	धींना
0			1		2	

झप ताल दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धींना	धींधीं	नाती	नाधी	धीनां	धींना	धींधी	नाती	नाधीं	धींना
×		2			0		3		

एक ताल (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धीधी	धागे तिरकिट	तुना	कत्ता	धागे तिरकिट	धीनां	धीधी	धागे तिरकिट	तूना	कत्ता	धागे तिरकट	धीनां
×		0		2		0	3	4			

तीन ताल (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धाधीं	धींधां	धाधीं	धींधा	धातीं	तींता	ताधीं	धींधा	धाधीं	धींधां	धाधीं	धीधां	धातीं	तींता	ताधीं	धींधा
×				2				0				3			

पाठ-13

रागों का चार्ट

राग का नाम	थाट	वादी	संवादी	वजित स्वर	आरोह	अवरोह	पकड़	गाने का समय	परिचय
1. भुपाली	कल्यान	ग	ध	म, नी	स रे ग प ध सां ।	सा ध प ग रे स ।	ग रे प ग ध प ग, रे ध़ स	रात्रि का पहला पहर	इस राग मे म, नी स्वर वर्जित इसलिए इस राग की जाति औड़व -औड़व है।
2. दुरगा	बिलावल	म	स	ग, नी	स रे म प ध सं	सं ध प म रे स	स रे म प ध, म रे, ध़ स	रात का दूसरा पहर	इस राग में ग, नी स्वर वर्जित हैं, इसलिए इस राग की जाति औड़व-औड़व है।
3. खमाज	खमाज	ग	नी	आरोह मे रे	स ग म प ध नी स	सं नी ध म प म ग, रे स	नी ध म प ध, म ग	रात्रि का दूसरा पहर	इस राग के आरोह में ऋषभ रे वर्जित है अवरोह में पूरे स्वर लगते हैं, इसलिए इस राग की जाति षाड़व-सम्पूर्ण है।
4. भैरवी	भैरवी	मा	सा	-	सा रे ग म प ध नी सां	सां नी ध प म ग रे सा	म ग रे ग सरे सध. नी सा।	प्रातः काल पहला पहर	इस राग में रे ग ध नी स्वर कोमल लगते है। इस राग की जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है।